



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 612]

नई दिल्ली, बुधवार, अक्टूबर 6, 1999/आश्विन 14, 1921

No. 612]

NEW DELHI, WEDNESDAY, OCTOBER 6, 1999/ASVINA 14, 1921

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 अक्टूबर, 1999

आयकर

का. आ. 1012 (अ).—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आय कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 43घ के खंड (ख) के साथ पठित धारा 295 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आय कर नियम, 1962 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम आय कर (तीसवाँ संशोधन) नियम, 1999 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. आय कर नियम, 1962 के नियम 6ड के पश्चात् निम्नलिखित नियम अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“6 डख धारा 43घ के खंड (ख) के अधीन लोक कंपनी की दशा में डूबंत या शंकास्पद ऋणों के प्रवर्ग 1 धारा 43घ के खंड (ख) के उपबंध ऐसी प्रत्येक लोक कंपनी की दशा में वहां लागू

होंगे जहां ब्याज के माध्यम से उसकी आय डूबंत और शंकास्पद ऋणों के निम्नलिखित प्रवर्गों से संबंधित है, अर्थात् :—

(क) (i) शंकास्पद आस्ति अर्थात् कोई ऐसा ऋण जो उपखंड (ii) में विनिर्दिष्ट किस्म की आस्ति के रूप में दो वर्ष से अधिक की अवधि के लिए अनिष्पादित रहा है।

(ii) उपखंड (i) में निर्दिष्ट अनिष्पादित आस्ति निम्नलिखित होगी :—

- (1) एक वर्ष से परे आवधिक उधार, यदि ब्याज की रकम छह मास के लिए 'विगत शोध्य' रहती है या किस्त छह मास से अधिक की अवधि के लिए शोध्य रहती है।
- (2) पट्टा भाड़ा या अवक्रय किस्त, यदि भाड़ा या किस्त छह मास के लिए 'विगत शोध्य' रहती है।
- (3) क्रय किए गए या बट्टाकृत बिल यदि बिल छह मास के लिए अतिशोध्य और असंदत्त रहते हैं; या
- (4) लघु कालिक उधार या अग्रिम प्रकृति की कोई अन्य प्रत्यय सुविधा (उनसे भिन्न जो ऊपर (1), (2) और (3) में निर्दिष्ट है), यदि ऐसी किसी सुविधा की बाबत प्राप्त की जाने वाली कोई रकम, छह मास की अवधि के लिए 'विगत शोध्य' रहती है।

(ख) हानि आस्ति, अर्थात् कोई ऋण जिसकी हानि के रूप में पहचान की गई है और असंग्रहणीय समझी गई है किन्तु निर्धारती के खाते में अपलिखित नहीं की गई है।”

स्पष्टीकरण :—इस नियम के प्रयोजन के लिए ऐसी कोई रकम तब 'विगत शोध्य' होनी समझी जाएगी जब वह शोध्य तारीख से पैं तीस दिन के लिए असंदत्त रहती है।

[अधिसूचना सं. 11101/फा. सं. 142/8/99-टीपीएल]

एस० बालासुब्रमन्यम, अवर सचिव

पाद टिप्पण :—मूल नियम अधिसूचना सं. का. आ. 969(अ) तारीख 26-3-1962 द्वारा प्रकाशित किए गए थे उसमें अधिसूचना सं. का. आ. 1009 तारीख 4-10-1999 द्वारा आय-कर उन्तीसवाँ नियम 1999 में अंतिम संशोधन किए।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

(CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 6th October, 1999

INCOME-TAX

S.O. 1012(E).—In exercise of the powers conferred by section 295, read with clause (b) of Section 43D, of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct taxes hereby makes the following rules further to amend the Income-tax Rules, 1962, namely:—

1. (1) These rules may be called the Income-tax (Thirtieth Amendment) Rules, 1999.
- (2) They shall come into force on their publication in the Official Gazette.

2. In the Income-tax Rules, 1962, after rule 6FA, the following rule shall be inserted, namely:—

“6EB. Categories of bad or doubtful debts in the case of a public company under clause (b) of section 43D.—The provisions of clause (b) of section 43D shall apply in the case of every public company where its income by way of interest pertains to the following categories of bad and doubtful debts, namely:—

- (a) (i) doubtful asset, that is, a debt which has remained non-performing asset of the nature specified in sub-clause (ii) for a period exceeding two years;
- (ii) non-performing asset referred to in sub-clause (i) shall be the following:—
 - (1) term loan beyond one year, if the interest amount remains 'past due' for six months or instalment is over-due for more than six months;
 - (2) lease rental or hire purchase instalment, if the rental or the instalment is 'past due' for six months;
 - (3) bill purchased or discounted, if the bill remains over due and unpaid for six months; or
 - (4) any other credit facility in the nature of short term loan or advance [other than those referred to in (1), (2) and (3) above], if any amount to be received in respect of such a facility remains 'past due' for a period of six months.

(b) loss asset, that is, a debt which has been identified as loss and considered as uncollectible but has not been written off in the accounts of the assessee.”

Explanation.—For the purposes of this rule, an amount shall be deemed to be 'past due' when it remains unpaid or thirty days beyond the due date.

[Notification No. 11101/F.No. 142/8/99-TPL]

S. BALASUBRAMANIAN, Under Secy.

Foot Note:— The principal rules were published vide Notification vide S.O. No. 969(E) dated 26-3-1962 and last amended by notification published under S.O. No. 1009 dated 4-10-1999.